B.S.N.V. P.G. College, Charbagh Lucknow

Department of History (MIH)

(B.A. III Semester) Paper II (History of Europe)

Syllabus

HISTORY OF EUROPE (1789-1848)

Lecture on Causes of French Revolution1789 **Dr. Nilima Gupta**

व्यवस्थापिका सभा– (Legisletive Assembly 1St Oct. 1791- 20th Sept. 1792)

नवीन संविधान के अनुसार व्यवस्थापिका सभा के लिये निवार्चन हुये। 1अक्टूबर 1791 को व्यवस्थापिका सभा की पहली बैठक हुई, सभा के कुल सदस्यों की कुल संख्या 745 थी। व्यवस्थापिका सभा कई दलों में विभाजित थी–

1–**राजतन्त्र वादी (Monarchists)** ये राजा लुई के समर्थक थे, इनकी संख्या 100 थी।

2–**संविधानवादी (Constitutionlisists)** ये सदस्य संविधान के समर्थक थे,राजा के सीमित अधिकारों में विश्वास रखते थे। इन्हें फेनियां कहा जाता था। इनकी संख्या 164 थी।

3–**सेण्टरपार्टी (Centre Party)** ये स्वतन्त्र सदस्य थे किसी भ्ती दल के सदस्य नहीं थे, इनकी संख्या 245 थी।

4–**गणतन्त्रवादी (Republicans)** गणतन्त्रवादियों की संख्या 236 थी,ये राजा की सत्ता को समाप्त कर के गणतन्त्र की स्थापना करना चाहते थे,ये अत्यन्त उग्रवादी थे। ये दो दलों में विभाजित थे–जिरोंदिन(Girondits) तथा जैकोबिन(Jacobins)

जिरोदिन–

इस दल के अधिकांस के सदस्य जिरोन्द नामक स्थान के थे इसलियेइन्हें जिरोंदित्स कहा गया। ब्रिसों, (Brissot), वेरियों (Verginiand),दुमोरिये (Dumouriez) इसके प्रमुख नेता थे।

जैकोबिन–

इस दल के सदस्य असभ्य एवं हिंसक थे। ये जैकोबिन नामक चर्च में रहते थे,वही पर अपन बैठकें करते थे, इसीलिये जैकोबिन कहलाये। व्यस्थापिका सभा में उनकी संख्य 140 थी। इनकी 406 शाखायें थी। दांतों (DANTON) , मारा (MARAT) एवं राब्सपीयर (ROBESPIERRE) प्रमुख नेता थे।

पिलनित्स की घोषणा (DECLARATION OF PILLINTZ)

फ्रांस की क्रान्ति का यूरोप के अन्य देशों द्वारा विरोद्ध किया जा रहा था। इनका विचार था यदि सम्मिलित रुप से लुई 16वें की सहायता की जाये तो फ्रांस में फिर से राज्य तंत्र की स्थापना की जा सकती है। इसी उददेश्य से अगस्त 1791 में आस्ट्रिया का शासक लियोपोल्ड II ने प्रशा के शासक फ्रेडरिक विलियम II से पिलनित्स नामक स्थान पर भेंट की और 27 अगस्त 1791 को एक घोषणा की – फ्रांस की समस्या यूरोपीय समस्या है। यदि यूरोप के अन्य राष्ट्र सहयोग दें तो आस्ट्रिया प्रशां फ्रांस में सशस्त्र हस्तक्षेप करने को तैयार है। इस घोषणा से फ्रांस में संसनी उत्पन्न हो गयी व्यवस्थापिका सभा में आस्ट्रिया के विरुद्ध यूद्ध का प्रस्ताव रखा गया जो भारी बहुमत से पास हुआ 07 वोट विरोद्ध में पड़े 20 अप्रैल 1792 को फ्रांस ने आस्ट्रिया के विरुद्ध की घोषणा कर दी लाफायत को फ्रांस का प्रमुख सेनापति बनाया गया। यूद्ध के प्रारम्भिक 05 महिनों में फ्रांसीसी सेना अनेक स्थानों में पराजित हुयी। फ्रांसीसी जनता ने इन पराजयों का दोषी लुई 16वें को माना। 20 जुन 1793 को जनता ने तुइलरी (TUILERIE) के महल पर आक्रमण कर दिया। जनता ने महल के दरवाजे तोड दिये और राजा के विरुद्ध नारे लगाये – पादरी मुर्दाबाद व ओदशों पे हस्ताक्षर करो इस अवसर पर लुई शान्त रहा और क्रान्तिकारियों की टोपी पहन ली जनता शान्त हो के लौट गयी।

ब्रुन्सविक की घोषणा (DECLARATION OF BRUNSWICK)

25 जुलाई 1792 को प्रशा ने भी फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। प्रशा के सेनापति ड्यूक आफ ब्रुन्सविक ने घोषणा करते हुए कहा – "फ्रांस की जनता राज्यसत्ता लुई को सौप दे तथा यदि किसी ने लुई 16वें अथवा उसके परिवार को किसी प्रकार की क्षति पहुंचायी और आस्ट्रिया और प्रशा की सेना का विरोध किया तो पेरीस को ध्वस्त कर दिया जायेगा।" इस घोषणा से फ्रांसीसी जनता भड़क उठी। हेज ने लिखा है – ब्रुन्सविक की घोषणा ने राजतन्त्र के द्वार को बन्द कर दिया (THE DECLARATION OF BRUNSWICK SEALED THE FATE OF THE FRENCH MONARCHY)

राजतन्त्र की समाप्ति (End of Monachy)

11 अगस्त 1792 को व्यवस्थापिका सभा में लुई 16वा के विषय में विचार विमर्श किया गया और उसे निलम्बित कर दिया गया। गणतन्त्र की स्थापना के लिये नवीन संविधान रचना की आवश्यकता थी। संविधान बनाने का अधिकार व्यवस्थापिका सभा के हाथ में था। अतः राष्ट्रीय सम्मेलन बुला कर निणर्य लिया गया कि नवीन राष्ट्रीय सम्मेलन की चुनाव कराये जायें।

आन्तरिम सरकार की स्थापना (Establishment of Interim Govt.)

11 अगस्त 1792 को व्यवस्थापिका सभा को भंग कर दिया गया। फ्रान्स में शासन का भार पेरिस की नागरिक सभा पेरिस कम्युन (Paris Commune) को सौपां गया–

–पेरिय कम्युन निम्न वर्ग की संस्था थी।

–इसने राष्ट्रीय सम्मेलन के चुनाव के लिये सम्पत्ति पर आधारित मताधिकार के नियम को समाप्त कर दिया।

–अब व्यस्क व्यक्ति को वोट देने का अधिकार था।

–पेरिस कम्युन ने लुई 16 को राजपद से हटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

–लुई 16 वा और उनके परिवार को पेरिस कम्युन ने टेम्पल के किले में

बन्दी बनाया ।

इस प्रकार राजतन्त्र का पतन हुआ और लोकतन्त्र की स्थापना हुई।

सितम्बर हत्याकाण्ड–(September Massacre)

पेरिस कम्युन का शासनकाल अत्यन्त अल्पकालीन था। इसके शासन काल में एक अत्यन्त दुर्भाग्य पूर्ण धटना हुई जिसने क्रान्ति पर धब्बा लगा दिया।

–पेरिस कम्युन क्रान्ति विरोधियों का दमन करना चाहते थे।

–इसी समय आस्ट्रियां एवं प्रशा की सेनाये पेरिस की ओर बड़ रही है, समाचार मिला।

–कम्युन के सदस्य मारा ने विचार व्यक्त किया कि बाहरी शत्रु से निबपटे से पूर्व फ्रान्स में विद्यमान देश द्रोहियों को हटा देना चाहिये।

–2सितम्बर से 6 सितम्बर 1792 तक भंयकर रक्त–पात हुआ। इस धटना को सितम्बर हत्या काण्ड कहा गया।

वामी का युद्ध–(Battle of Valmi)

वामी का युद्ध 20 सितम्बर 1792 को लड़ा गया, इस युद्ध में फ्रान्सीसी सेनापति दूमोरिये ने आस्ट्रिीया प्रशा की सेना को परास्त किया। जिससे फ्रान्सीसी सेनाओ का मनोबल ऊॅचा उठा।

जिस दिन वामी का युद्ध हुआ उसी दिन 20 सितम्बर 1792 कों राष्ट्रीय सम्मेलन के चुनाव हुये और फ्रान्स में रास्ट्रीय सम्मेलन का शासन आरम्भ हुआ।

Dr. Nilima